विजयदांन देथा

# जूँ जूँ कहाँ चली

एक थी जूँ। वह एक छोरी के माथे में रहती थी। वह उस जूँ को बड़े आराम से रखती थी। हलवा पूड़ी खाने को देती थी। और जूँ उसके सिर में चलते समय सोने की माँग बना दिया करती थी तथा उस पर हीरे-पन्नों का जड़ाव लगा देती थी। छोरी के सिर में सोने की कई माँगें बन गईं थीं और उसके गुथे हुए बालों में हीरे-मोती धप-धप चमकने लगे थे। किन्तु जब वह जूँ छोरी के सिर को छोड़कर कहीं दूसरी जगह जाने की मंशा करती तो उसके सिर में खुजली चलने लगती। तब वह उसी पल उसे पकड़ लेती और अपने माथे से बाहर नहीं जाने देती। यदि वह जूँ बाहर जाने की मंशा नहीं रखती तो सिर में खुजली नहीं चलती थी।

एक दिन वह जूँ उसके सिर से बाहर जाने के लिए रवाना हुई – बहुत ही धीरे-धीरे सफाई के साथ। लेकिन तब भी खुजली चले बिना नहीं रही। छोरी को तुरन्त वहम हो गया। वह उसे बिलमाने की खातिर इधर-उधर के सवाल पूछने लगी।"

अरी मेरी प्यारी जूँ कहाँ चली?
चने के पान तोड़ने के लिए।
कैसे तोड़ेगी?
भचड़-भचड़।
उन्हें काटेगी कैसे?
सटक-सटक।
छौंकेगी कैसे?
छमम-छमम।
खाएगी कैसे?
सबड़-सबड़।
अच्छा तो सोती कहाँ है?
चूल्हे के पीछे।
तू बिछाती क्या है?
सूप बिछाती हूँ।
तू ओढ़ती क्या है?
चलनी।
तू सिरहाने क्या लगाती है?
चकलोटा।
और पैरों के नीचे क्या देती है?
बेलन।
अरी तू खाँसती कैसे है?
खूँ खूँ खूँ!

तब वह छोकरी बोली, "तू मेरी जूँ, तू मेरी जूँ। बता कहाँ चली?" यह कहते ही उसने चटपट जूँ को पकड़ लिया। उसके नाखून बढ़े हुए थे। ज़ोर से चिमटी पींचते ही जूँ का पदड़का निकल गया। छोकरी रोने लगी। एक आँसू की बूँद जूँ के कतरे पर गिरी तो वह अमूल्य लाल रत्न में बदल गई। उस छोकरी ने लाल रत्न को सवा लाख रुपए में बेच डाला। धूमधाम से अपनी शादी की और कई सालों तक मौज व आनन्द से रही।

चित्रः कनक